❶

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक
आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

मेधामयासिषम्।

सामवेद 171

मैं धारणावती बुद्धि को प्राप्त करूँ।

May I attain superior intellect.

वर्ष 42, अंक 22 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 22 अप्रैल, 2019 से रविवार 28 अप्रैल, 2019
विक्रमी सम्वत् 2076 सृष्टि सम्वत् 1960853120
दयानन्दाब्द : 195 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
दूरभाष: 23360150 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें - www.thearyasamaj.org/aryasandesh

दिल्ली की समस्त आर्यसमाजों के सहयोग से आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य के तत्त्वावधान में

145वां आर्यसमाज स्थापना दिवस हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न

महर्षि दयानन्द के दिखाए रास्ते पर आगे बढ़े आर्य समाज – स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती

वेद के विचारों से ही होगा राष्ट्र और विश्व का कल्याण – डॉ. महेश विद्यालंकार

संपूर्ण प्रकृति में नूतनता का संचार हो रहा है। पुराने पतों के स्थान पर नई कोपलें प्रस्फुटित हो रही हैं। चारों तरफ हरियाली तथा रंग-बिरंगें फूलों से वातावरण महक रहा है। क्योंकि सृष्टि संवत् एक अरब छियानवें करोड़ आठ लाख तरेपन हजार एक सौ बीस, तद्नुसार नव विक्रमी सवंत्सर संवत् 2076 के अनुसार आर्यसमाज का 145वां स्थापना दिवस मनाया जा रहा था। इस उमंग, उत्साह, उल्लास, आशा, उत्साह के वातावरण में 6 अप्रैल 2019 के शुभ अवसर पर कमानी ऑडीटिरयम तानसेन मार्ग मंडी हाऊस नई दिल्ली के प्रांगण में आर्य केंद्रीय सभा दिल्ली राज्य द्वारा एक दिव्य आयोजन किया गया। जिसमें आर्य केंद्रीय सभा, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं दिल्ली राज्य के आर्य समाजों के अधिकारी, सदस्य, कार्यकताओं के साथ-साथ आर्य विद्यालयों, आर्य गुरुकुलों के बच्चों ने भाग लिया।

इस प्रेरणाप्रद महान पर्व का शुभारंभ आचार्य जयेंद्र जी के ब्रह्मत्व में यज्ञ से हुआ। इस अवसर पर यजमान के रूप में दिल्ली सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी एवं श्रीमती वीना आर्य जी, श्री दिलीप कुमार जी एवं श्रीमती मीना कुमारी जी, श्री संदीप महाजन जी एवं श्रीमती मनीषा जी, श्री वरुण जी एवं श्रीमती अनीता जी आदि ने नववर्ष एवं आर्य समाज स्थापना दिवस के अवसर पर यज्ञ में आहुति देकर विश्व मंगल की कामना की तथा समस्त आर्यजनों के लिए सुख, शांति की अभिवृद्धि की प्रार्थना की। यज्ञ के उपरांत आर्य जगत की सुप्रसिद्ध मधुर भजन गायिका श्रीमती संगीता आर्या जी ने मधुर प्रेरक भजनों से संपूर्ण वातावरण को तरंगायित किया।

इस अवसर पर मंच पर विराजमान

- शेष पृष्ठ 5 पर

आर्यसमाज स्थापना दिवस के अवसर पर आयोजित यज्ञ के अवसर पर यजमानों को आशीर्वाद प्रदान करते आर्य संन्यासीगण। दीप प्रज्ज्वलित करके कार्यक्रम का शुभारम्भ करते पद्मभूषण महाशय धर्मपाल जी साथ में हैं श्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द जी, अरुण प्रकाश वर्मा जी, राजेन्द्र दुर्गा जी, धर्मपाल आर्य जी, अजय सहगल जी, सुरेन्द्र रैली जी एवं अन्य। इस अवसर पर एमिटी परिवार के सदस्य श्री आनन्द कुमार चौहान जी का स्वागत करते पद्मभूषण महाशय धर्मपाल जी एवं सभा प्रधान श्री धमपाल आर्य जी।

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के जन्मगृह टंकारा पहुंचे पद्मभूषण आर्यरत्न महाशय धर्मपाल जी

ऋषि जन्मभूमि को और भव्य बनाने में देंगे सहयोग

महाशय जी को भारत सरकार द्वारा पद्म् भूषण से अलंकृत किये जाने के उपरान्त उनके परम मित्र एवं आर्य समाज में सेवा कार्यों के क्षेत्र में युवा अवस्था के समय से रहे मित्र श्री रामनाथ जी सहगल 95वें वर्षीय उन्हें शुभकामनाएं देने उनके कार्यालय पहुँचे तो पहले से ही वहां अपार जनसमूह उपस्थित था। वृद्धावस्था को देखते हुए वहां उपस्थित श्री विनय आर्य जी ने दोनों मित्रों की मुलाकात शीघ्र ही करवा दी और आपसी बातचीत में सहगल जी ने महाशय जी को उनकी आर्य समाज एवं व्यवसाय के क्षेत्र में प्राप्त उपलब्धियों की चर्चा की और आग्रह किया कि कितने दशक बीत गये आपको उस देव दयानन्द के पदचिन्हों पर चलते हुए, आर्य समाज एवं वेद प्रचार की सेवा करते हुए लेकिन कभी आप ऋषिजन्म भूमि टंकारा नहीं पधारें। महाशय जी ने सहर्ष निमन्त्रण स्वीकार किया और मित्र सहगल जी से कहा देखो प्रभु कि कब इच्छा होगी। उस दिन की मुलाकात के उपरान्त टंकारा जन्मभूमि के सहमन्त्री श्री अजय टंकारा वाला ने इस निमन्त्रण यात्रा को फलीभूत करने हेतु मन बना लिया और निरन्तर महाशय जी के कार्यालय से सम्पर्क बनाये रखा।

आखिर दिनांक 08.04.2019 का दिन निश्चित हुआ और टंकारा का एक दिन का कार्यक्रम बनाया गया। दिल्ली हवाई अड्डे पर उनका, उत्साह देखते ही बनता था जैसे किसी छोटे से बालक को, यात्रा से पूर्व उत्साह और ऊर्जा होती है। हवाई अड्डे पर देखते ही देखते क्या लोग, क्या कर्मचारी सभी उनके साथ चित्र लेने को ललायित हो रहे थे जैसे महाशय जी के

शेष पृष्ठ 5 पर

वेद-स्वाध्याय

सब यज्ञों का महान तत्त्व विश्वतोधार होना

स्वर्यन्तो नापेक्षन्तऽआ द्याꣳ रोहन्ति रोदसी।
यज्ञं ये विश्वतोधार सुविद्वाꣳसो वितेनिरे।। अथर्व. 4/14/4
ऋषिः भृगुः।। देवता - **आज्यम्।।** छन्दः **अनुष्टुप्।।**

शब्दार्थ - **ये** = जो **सुविद्वांसः** = उत्तम ज्ञानी महापुरुष **विश्वतोधारं यज्ञम्** = विश्वतोधार यज्ञ को, सबको सब ओर से धारण करनेवाले यज्ञ को **वितेनिरे** = विस्तृत करते हैं वे **स्वः यन्तः** = आनन्दमय स्थिति को जाते हुए **न अपेक्षन्त** = किसी अन्य वस्तु की अपेक्षा नहीं करते या नीचे नहीं देखते, **रोदसी** = वे द्यावापृथिवी को लाँघकर **द्याम्** = द्युलोक में **आरोहन्ति** = चढ़ जाते हैं।

विनय - हमारे सब यज्ञ 'विश्वतो-धार' होने चाहिएँ, पर प्रायः हमारे यज्ञ एकतोधार होते हैं। इसका अर्थ यह है कि हम दूर तक देखकर, सब संसार को दृष्टि में रखकर लोकोपकार नहीं करते, अतः हमारे ये यज्ञकार्य परिमित, अदूरगामी और एकपक्षीय होते हैं। हम केवल अपने समाज, अपने कुटुम्ब, केवल एक संस्था या केवल अपने देश व राष्ट्र के हित के लिए अपने उपकार-कार्य करते हैं और उनके लिए बड़े-बड़े स्वार्थ-त्याग तक करते हैं, पर यह ध्यान नहीं रखते कि वह संस्थाहित, देशहित, वह राष्ट्रहित संसार के हित के भी अविरुद्ध होना चाहिए। विश्वतोधार यज्ञ वह है जो 'सर्वभूतहित', के लिए होता है, जो सम्पूर्ण विश्व के भले के लिए, प्राणिमात्र के हित की दृष्टि से होता है, अथवा यूँ कहें कि जो परमात्मा की प्रीत्यर्थ होता है। वही यज्ञ पूरी तरह फैला, वितत होता है, व्यापक होता है। वही यज्ञ 'विष्णु' कहाता है। पर यज्ञ के इस 'विष्णु', 'विश्वतोधार' रूप को संसार में कुछ उत्तम ज्ञानी ही समझते हैं और ये विरले ही उसे वितत करते हैं, अतः ये 'सुविद्वान्' तो शीघ्र ही पृथिवी और अन्तरिक्ष के स्थूल और मानसिक लोकों को लाँघकर आत्मा के सुखमय और प्रकाशमय लोक में चढ़ जाते हैं, आसानी से पहुँच जाते हैं। वे उस आत्मिक सुख की ओर जाते हुए, उसका आनन्द लेते हुए दुनिया की किसी भी अन्य वस्तु की परवाह नहीं करते। 'विश्वतोधार' यज्ञ करनेवालों को 'स्वः' का एक ऐसा दृढ़ अवलम्बन मिल जाता है कि वे फिर संसार के अन्य किसी भी सहारे की तनिक भी अपेक्षा नहीं करते। चाहे उनके साथी उनसे छिन जाएँ, उनका प्रभुत्व नष्ट हो जाए, उनकी सब प्रतिष्ठा जाती रहे, पर वे इन सहारों के रखने के लिए भी कभी अपने यज्ञ को थोड़ी देर के लिए भी छोटा, अव्यापक नहीं करते। वे अपनी दृष्टि को कभी नीची या संकुचित नहीं करते। ऊपर चढ़ते हुए नीचे की क्षुद्र चीजों पर कभी उनकी दृष्टि ही नहीं पड़ती। यही रहस्य है जिससे वे ऊपर-ऊपर ही जाते हैं और शीघ्र सुखमय=प्रकाशमय द्युलोक में जा पहुँचते हैं।

-: साभार :-
वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

बदसूरत होते पारिवारिक रिश्ते

.....जैसे-जैसे टेक्नोलोजी का विस्तार हो रहा है वैसे-वैसे हमारे यहाँ भी सात फेरे और सात वचन से बंधे पवित्र रिश्तों में आज बिखराव, पतन, अपराध, हत्या, आत्महत्या आदि बड़ी तेजी से पांव पसार रही हैं। या कहो कि सामाजिक सीमाएं और मर्यादाएं खोखली होकर बिखरती नजर आ रही हैं। देखा जाये आपसी संवाद स्थापित करने का साधन स्मार्टफोन भी पति-पत्नी के रिश्ते में दूरियां लाने में कम जिम्मेदार नहीं हैं। आज परिवारों में दिन की शुरुआत फेसबुक या व्हाट्सएप्प से होती है और देर रात तक आने वाले नोटिफिकेशन जगाए रखते हैं और इस लत की कीमत रिश्तों को चुकानी पड़ रही है। .....

बिलकुल नया जमाना है लोग पत्र-पत्रिकाओं और किताबों की दुनिया से निकलकर इंटरनेट की रहस्यमयी दुनिया में प्रवेश कर चुके हैं। ऐसे में एक से ज्यादा साथी रखने का रुझान अब सीमित दायरे में नहीं रहा है। बल्कि लोग आज ऐसे रिश्तों को आजमा कर देख रहे हैं जिनको अब तक सामाजिक रूप से गलत समझा जाता था। देखा जाये तो इंटरनेट की अत्याधुनिक दुनिया में आजकल कई लोगों के साथ शारीरिक सम्बन्ध बनाने वाले लोगों को भी आधुनिकता से जोड़ा जा रहा है, किन्तु इन आधुनिक रिश्तों के जो परिणाम सामने आ रहे हैं वे वाकई में सोचने वाले हैं कि आखिर हमारा समाज जा कहाँ रहा है?

अभी कई रोज पहले महाराष्ट्र के बल्लारपुर में कॉलेज में पढ़ाने वाले ऋषिकांत नाम के एक शख्स ने अपनी दो नाबालिक बेटियों को फांसी पर लटकाकर जान से मार डाला। इसकी तस्वीर अपनी पत्नी प्रगति को व्हाट्सएप करने के बाद उसने खुद भी आत्महत्या कर ली। पुलिस के अनुसार ऋषिकांत अपनी पत्नी प्रगति की बेवफाई से परेशान था। दूसरा मामला बिहार के कंकड़बाग थाना क्षेत्र का है। यहाँ एक बाप अपनी मासूम बच्ची को इसलिए शारीरिक और मानसिक प्रताड़ना देता था, क्योंकि उसकी पत्नी उसे छोड़कर किसी दूसरे के साथ चली गई थी।

एक और मामला महाराष्ट्र के ठाणे जिले का कुछ समय पहले का है। यहाँ एक शख्स ने अपनी पत्नी को चाकू से बेरहमी से मार डाला था। घटना के वक्त उसकी पत्नी अपने ऑफिस में काम कर रही थी, पति चाकू लेकर उसके ऑफिस में पहुंचा और पत्नी पर एक बाद एक 26 वार कर डाले। कारण यह शख्स अपनी पत्नी पर शक करता था। पिछले साल मध्य प्रदेश के मुरैना जिले में एक खौफनाक घटना ने सबके रौंगटे खड़े कर दिए थे जब एक पति ने अपनी पत्नी के चरित्र पर शक के चलते पत्नी की गर्दन काटकर थाने ले गया था।

सभी जगह सिर्फ महिलाएं ही इन अवैध सम्बन्धों या शक का शिकार है नहीं हैं। पिछले वर्ष फरवरी माह में ओडिशा के नवरंगपुर जिले में अवैध संबंध के शक में एक महिला ने अपने पति का प्राइवेट पार्ट काट दिया था। यहाँ महिला को अपने पति पर शक था कि उसके किसी अन्य महिला के साथ अवैध संबंध हैं। यहीं नहीं पिछले एक साल में इस तरह की दर्जनों शिकायतें महिलाएं थानों में लेकर पहुंची हैं जिनमें कहा गया है कि मेरे पति मेरी जासूसी कराते हैं। घर में मेरा मोबाइल चैक होता है। मैं फेसबुक और व्हाट्सएप्प पर किससे क्या चौटिंग कर रही हूं। इसकी पूरी डिटेल पति रखते हैं, साथ ही घर आने के बाद ऑफिस से आने वाले फोन पर मेरे पति शक की नजर से देखते हैं।

असल में एक से ज्यादा साथी की चाह और फेसबुक, व्हाट्सएप्प पर चौटिंग का शौक आए दिन पति-पत्नी के रिश्तों में दरार डाल रहा है। चौटिंग के चलते आए दिन पति और पत्नी के बीच शक गहरा रहा है। शक के बाद कई जगह रिश्ते टूट रहे हैं तो कई जगह हत्या हिंसा तक भी पहुँच रहे हैं। यानि अभी तक पति और पत्नी के बीच भावनाओं और विश्वास का जो मजबूत सेतु हुआ करता था आज अविश्वास और बेपरवाह होते रिश्तों ने उस सेतु को कमजोर कर दिया है।

कुछ सालों पहले तक ऐसी घटनाएँ पश्चिमी देशों में देखने को मिलती थीं। एक से ज्यादा साथी रखने का प्रचलन उनकी सामाजिक दुनिया का हिस्सा था। जबकि हमारे यहाँ पति-पत्नी को एक दूसरे के भरोसे प्रेम और एक दूसरे की आपसी स्वीकार्यता को बढ़ावा देने वाला रहा है। किन्तु जैसे-जैसे टेक्नोलोजी का विस्तार हो रहा है वैसे-वैसे हमारे यहाँ भी सात फेरे और सात वचन से बंधे पवित्र रिश्तों में आज बिखराव, पतन, अपराध, हत्या, आत्महत्या आदि बड़ी तेजी से पांव पसार रही हैं। या कहो कि सामाजिक सीमाएं और मर्यादाएं खोखली होकर बिखरती नजर आ रही हैं। देखा जाये आपसी संवाद स्थापित करने का साधन स्मार्टफोन भी पति-पत्नी के रिश्ते में दूरियां लाने में कम जिम्मेदार नहीं हैं। आज परिवारों में दिन की शुरुआत फेसबुक या व्हाट्सएप्प से होती है और देर रात तक आने वाले नोटिफिकेशन जगाए रखते हैं और इस लत की कीमत रिश्तों को चुकानी पड़ रही है।

शादी के बाद अक्सर भावनाओं को न समझने के बहाने से लेकर जब दोनों अपनी जिम्मेदारियों से बचने के लिए किसी तीसरे की तरफ आकर्षित होने लगते हैं। यानि तीसरा इन्सान उनके बीच में आता है तब वैवाहिक रिश्ते का अंत शक से शुरू हो होता है और एकल परिवार में उन्हें समझाने वालों की कमी के चलते भी हालात मारपीट, हमले और हत्या तक पहुंच जाते हैं।

शादी के बाद जहां वैवाहिक रिश्ते को बनाए रखने में पति और पत्नी दोनों की जिम्मेदारी होती है वहीं इसके खत्म करने में भी दोनों का हाथ होता है। एक दूसरे के प्रति विश्वास, समर्पण और आत्मीयता का भाव रिश्तों को मजबूत बनाता है। अगर आप आधुनिक तकनीक का इस्तेमाल करते है तब आप उस तकनीक का सदुपयोग आपसी रिश्तों में नजदीकी लाने में करें न कि उसे रिश्तों में दूरियां बनाने का कारण बनायें। साथ ही यह भी ध्यान रखना होगा कि बाहरी सम्बन्ध दोनों के बीच शक का आधार बनते हैं और ऐसे सम्बन्धों को न हमारा समाज स्वीकार करता न धर्म और न ही हमारा संविधान। ऐसे में पति पत्नी दोनों को एक दूसरे पर विश्वास रखना होगा और सामने वाले को उस विश्वास को मजबूत करना होगा और यह आप पर निर्भर करता है कि आपको एक हँसता-खेलता खुबसूरत रिश्तों का परिवार चाहिए या दुःख क्लेश और हिंसा के अंधकार में जाता एक बदसूरत रिश्तों का परिवार। यह सब सिर्फ आपको ही सोचना है क्योंकि परिवार आपका है।

- सम्पादक

समसामयिक लेख

जम्मू-कश्मीर भी रहेगा और हिन्दुस्तान भी रहेगा

जम्मू-कश्मीर भारत का एक ऐसा हिस्सा रहा है जो पिछले 70 सालों से कश्मीर के राजनेताओं की राजनीति की खुराक बना हुआ है। एक बार फिर देश में लोकसभा चुनाव है तो जाहिर सी बात है कश्मीर की तीन सीटों पर भी अगले कुछ चरणों में मतदान होगा। किन्तु मतदान से पहले जिस तरह के बयान सामने आ रहे हैं वे कश्मीर की वादियों को आग में झोकने वाले सुनाई पड़ रहे हैं। घाटी की अनंतनाग सीट से चुनाव लड़ रही महबूबा मुफ्ती अपनी सीट बचाने के लिए हर वह तरीका अपना रही है चाहे उसके लिए घाटी में आग क्यों न लग जाए।

असल में भारतीय जनता पार्टी के चुनावी घोषणा पत्र में धारा 370 खत्म करने की बात कही गई है। इस पर जम्मू-कश्मीर की पूर्व मुख्यमंत्री महबूबा मुफ्ती ने चेतावनी देते हुए है कि "अगर इसे खत्म किया गया तो भाजपा को मेरी चेतावनी है कि न जम्मू-कश्मीर रहेगा न हिंदुस्तान रहेगा।" ....."वह आग के साथ खेलना बंद कर दे, जम्मू कश्मीर बारुद है, आप चिंगारी फेंकोगे तो न जम्मू-कश्मीर रहेगा न हिंदुस्तान रहेगा।"

ये तीखे बोल किसी अलगाववादी के नहीं हैं ये बोल है राज्य में कई वर्ष मुख्यमन्त्री रही एक जिम्मेदार महिला नेता महबूबा मुफ्ती के। लेकिन सवाल उठता है कि क्या यह बयान वोट लेने के लिए दिया है या फिर सचमुच ही कश्मीर को आग में झोखने का इरादा है? या इसके कारण और निवारण कहीं और छिपे हैं, यदि ऐसा है तो धारा 370 जो कश्मीर में समस्या बनी है उसका समाधान कैसे होगा?

हालाँकि यह मुद्दा पूरे भारत के लिए बेहद संवेदनशील है पर जम्मू-कश्मीर के लिए कुछ ज्यादा भावनात्मक है। बीजेपी के संकल्प पत्र में इसे खत्म करने की कोशिश का ऐलान करने के बाद पूर्व मुख्यमंत्री फारूक अब्दुल्ला ने कहा कि "यदि ऐसा हुआ तो जम्मू-कश्मीर का भारत में विलय का प्रावधान भी खत्म हो जाएगा और राज्य आजाद हो जाएगा।"

अब इसमें पहला सवाल तो यही है कि कश्मीर राज्य किससे आजाद हो जायेगा? रोज होती आतंकी घटनाओं से, या अलगावादियों से? क्या कश्मीर आजाद हो जायेगा अब्दुल्ला और मुफ्ती खानदान के चंगुल से? सोचने वाली बात ये भी है कि अलगाव ये बेतुकी मांग सिर्फ घाटी से ही क्यों उठती है जबकि जम्मू और लद्दाख भी इसी राज्य का हिस्सा है। आज कबूतर की तरह आँख बंद कर लेने से इस समस्या का समाधान नहीं होगा बल्कि समझना होगा कि समस्या कहीं घाटी में एक ही मजहब की बहुलता इसका असली कारण तो नहीं जिसका पाकिस्तान मजहबी रूप से भावनात्मक फायदा उठाना तो नहीं चाह रहा?

दूसरा सवाल यह भी है कि अपना पूरा जीवन राजनीति करके क्या फारूक अब्दुल्ला बता सकते है कि कश्मीर को वह गुलाम समझते हैं? महबूबा मुफ्ती आज बारूद के ढेर की बात कर रही हैं क्या यह बात उन्होंने तब भी उठाई थी जब भारी संख्या में पाकिस्तानी आतंकी कश्मीर में आ घुसे थे और आईएसआई की शह पर कश्मीर अलगाववादियों का अड्डा बन गया था। आए दिन सड़कों पर हथियार लहराते हुए हिंसक जुलूस निकालना और सुरक्षा बलों पर गोलियां दागना उनका प्रिय शूगल हो गया था। क्या उस समय कश्मीर फूलों की सेज पर बैठा था?

क्या फारुख अब्दुल्ला भूल गये कि जत्था नई दिल्ली 30 दिसंबर, 1989 को पहुंचा था। क्या कश्मीर जब आजाद था या फिर इस्लाम के नाम यह सब कत्लेआम करने की खुली आजादी उन्होंने खुद दी थी क्योंकि उस समय कश्मीर में वही मुख्यमंत्री थे?

असल में इन कश्मीरी नेताओं और अलगाववादियों ने अपना राजनैतिक चूल्हा जलाये रखने के लिए कश्मीर में यह आग कभी बुझने ही नहीं दी। खुद कश्मीर में एक समय राज्यपाल रहे जगमोहन ने कश्मीर पर अपनी बहुचर्चित पुस्तक "कश्मीर समस्या और विश्लेषण" में विस्तृत वर्णन किया है। वे लिखते हैं कि उस समय कश्मीर में कानून-व्यवस्था का नामोनिशान नहीं बचा था। मस्जिदों से कश्मीरी पंडितों के खिलाफ नारे लग रहे थे। पड़ोसी कह रहे थे, आजादी की लड़ाई में शामिल हो या वादी छोड़कर भागो। नवम्बर 1989 में बुरी तरह बिगड़ी सामाजिक, राजनीतिक और कानून व्यवस्था की स्थिति के घाटी में कश्मीरी पंडितों के कत्लेआम और उनके रहते उन्हें घाटी से बाहर खदेड़ने का सिलसिला शुरू हो गया था। घाटी से जान हथेली पर लेकर भागे कश्मीरी पंडितों का पहला

.....असल में इन कश्मीरी नेताओं और अलगाववादियों ने अपना राजनैतिक चूल्हा जलाये रखने के लिए कश्मीर में यह आग कभी बुझने ही नहीं दी। खुद कश्मीर में एक समय राज्यपाल रहे जगमोहन ने कश्मीर पर अपनी बहुचर्चित पुस्तक "कश्मीर समस्या और विश्लेषण" में विस्तृत वर्णन किया है। वे लिखते हैं कि उस समय कश्मीर में कानून-व्यवस्था का नामोनिशान नहीं बचा था। मस्जिदों से कश्मीरी पंडितों के खिलाफ नारे लग रहे थे। पड़ोसी कह रहे थे, आजादी की लड़ाई में शामिल हो या वादी छोड़कर भागो। .....

कश्मीरी पंडित हिंसा, आतंकी हमले और हत्याओं के माहौल में जी रहे थे। सुरक्षाकर्मी थे लेकिन इतने नहीं कि वे उनकी जान और सामान की सुरक्षा कर सकें।

आए दिन जुलूस, धरने और प्रदर्शन हो रहे थे जिनमें सरेआम आजादी के नारे लगते और पाकिस्तानी झंडा फहराया जाता, भीड़ में शामिल हथियारबंद अलगाववादी जम्मू-कश्मीर पुलिस के जवानों और सुरक्षा बलों को अपना निशाना बनाते जिसकी जवाबी कार्रवाई में निर्दोष मारे जाते थे।

कश्मीरी पंडितों का कत्लेआम करके उन्हें घाटी से निकाल बाहर करने की साजिश भी बदस्तूर जारी रही। जगमोहन पर कश्मीरी पंडितों के देश निकाले की अनदेखी के आरोप भी लगे। ऊपर से यही फारूख अब्दुल्ला और पूर्व प्रधानमंत्री राजीव गांधी की राजनीतिक पैंतरेबाजी ने ऐसे हालात बनाए कि वहां जगमोहन का टिकना मुश्किल हो गया।

वहां हमेशा मुख्यमंत्री और राज्यपाल बदलते रहे लेकिन हालात कभी नहीं बदले। नई दिल्ली में बैठे नेता शब्दों का ताना-बाना बुनकर इसे भारत का अभिन्न अंग बताते रहे लेकिन क्या मात्र अभिन्न अंग बताने से कश्मीर समस्या का समाधान संभव होगा। इसलिए आज भाजपा के संकल्प पत्र से समूचे देश में फिर आस जगी है कि कश्मीर समस्या का हल धारा 370 खत्म करने के अलावा कुछ नहीं होगा। अपनी राजनितिक रोटी सेकते रहने के लिए कश्मीरी राजनैतिक दल दिल्ली को गुरियाते रहेंगे जो देश के लिए हितकारी नहीं है। आज लोग इस संकल्प पत्र को आशाओं के प्रतीक के रूप में देख रहे हैं। इसी से जम्मू-कश्मीर भी रहेगा और हिंदुस्तान भी रहेगा।

वैदिक शगुन लिफाफे

महर्षि दयानन्द के चित्र एवं वेदमन्त्रों सहित सुन्दर डिजाइनों में

सिक्के वाले	बिना सिक्के
मात्र 500/-रु. सैंकड़ा	मात्र 300/-रु. सैंकड़ा

प्राप्ति स्थान : -दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली
दूरभाष : 011-23360150, 09540040339

आर्य विद्या परिषद् दिल्ली द्वारा
समस्त विद्यालयों/आर्य शिक्षण संस्थाओं हेतु प्रकाशित

नैतिक शिक्षा की पुस्तकें

नर्सरी से 12वीं कक्षा तक

आकर्षक छूट 25%

बेहतरीन कागज पर आकर्षक छपाई में तैयार कराई गई नैतिक शिक्षा की पुस्तकें छात्रों के नैतिक, बौद्धिक, आध्यात्मिक ज्ञान तथा राष्ट्रीय भावना जागृत करने वाली हैं। ये पुस्तकें दिल्ली के समस्त विद्यालयों/शिक्षण संस्थाओं के साथ-साथ दिल्ली से बाहर अन्य प्रदेशों के विद्यालयों के पाठ्यक्रम में भी नर्सरी से कक्षा 12वीं तक लागू हैं। अपने विद्यालय/शिक्षण संस्था के लिए आवश्यकतानुसार मंगवाने के लिए सभा कार्यालय से सम्पर्क करें।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15, हनुमान रोड, नई दिल्ली- 110001
☎ : 23360150, 9540040339; Email : aryasabha@yahoo.com

ओ३म्
भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण
(द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)
सत्य के प्रचारार्थ

सत्यार्थ प्रकाश
सत्य के प्रचारार्थ

● प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
● विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
● स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन

कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें

आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

विश्व के सबसे बड़े लोकतन्त्र का उत्सव : लोकसभा निर्वाचन

आरक्षण बाद में; पहले महिलाओं को सम्मान देना सीखें राजनेता

राजनेता जब आप इस शब्द को आप सुनते हैं तो आपके मन में कैसी फीलिंग आती है? कैसी भी आती होगी पर मुझे नहीं लगता है समाजवादी पार्टी के नेता आजम खान के लिए सही फिलिंग आती हो। कई रोज पहले उन्होंने अपने चुनाव प्रचार के दौरान उत्तर प्रदेश की रामपुर सीट पर भाजपा के टिकट पर चुनाव लड़ रही अभिनेत्री जया प्रदा के अंगवस्त्रों को लेकर बेहूदा टिप्पणी की थी.

अनेकों नेता और देश के लोग इनके इस बयान से गुस्सा भी हुए और पलटवार भी किया। किन्तु मेरी आजम खान से सभ्यता और संस्कार की अपेक्षा बहुत पहले तब खत्म हो गयी थी जब इन्होने अपने राष्ट्र अपनी भारत माता को डायन तक कह डाला था। हालाँकि देखा जाये तो अभिनेत्री से नेता बनी जयाप्रदा आजम खान की कलाई पर राखी बांधती रही है। लेकिन इसके बावजूद भी एक बहन के प्रति उनके ये शब्द भारतीय समाज हमारे संस्कार हमारी संस्कृति के विरुद्ध ही नहीं बल्कि रिश्ते नातों की गरिमा पर भी चोट करती है।

उनका यह बयान उनकी भूल और बड़बोलेपन से बिलकुल तोलकर न देखा जाये क्योंकि इससे पहले भी जयाप्रदा को आजम ने 'नचनिया' से लेकर 'घुँघरू वाली' तक कहा था। पूरे शहर में उनकी फिल्मों के अन्तरंग दृश्यों के पोस्टर तक लगाए गए। लेकिन जयाप्रदा घूम-घूमकर वोटरों के बीच आजम खान को भैया कहती रहीं। लेकिन एक भाई क्या होता है बहन के प्रति उसका स्नेह, राजनीति और रिश्तों की गरिमा आजम खान को कौन समझाए?

शायद में नाहक ही दुखी हो रहा हूँ क्योंकि मैं अपने संस्कति और सभ्यता के आईने से इस अश्लील बयान को देख रहा हूँ पर जिसने यह बयान दिया उनकी संस्कृति और सभ्यता में शायद भाई बहन का रिश्ता पवित्र न समझा जाता हो और यह बयान गंगा जमुना तहजीब भूलकर अपनी मजहबी संस्कृति के अनुरूप दिया हो? क्योंकि यह कोई नई मानसिकता नहीं है, जायसी के अनुसार अलाउद्दीन पद्मिनी को अपने विजयी अभियान के पहले खुद देखने आता है, तो वह अपने साथ एक शीशा लेकर आता है और उसमें पद्मिनी को देखता है। वह रतन सिंह से कहता है कि वह पद्मिनी को अपनी बहन की तरह मानता है। लेकिन देखकर फिर उसी बहन पर गन्दी निगाह रख लेता है बस यही है इनकी वो मजहबी मानसिकता जो शुरू से चली आ रही है तो इसमें ज्यादा दुखी होने की बात नहीं हैं।

हाँ यह जरुर है कि यदि महिला सम्मान की बात हो तो यह कोई अकेला नेता नहीं है अगर देश की राजनीति में देखें तो रिश्तों से अलग भी महिला राजनेता पुरुष नेताओं के हाथों अश्लील, अभद्र और अपमान जनक टिप्पणओं की शिकार होती रही हैं। 2017 में शरद यादव ने वोट मांगते हुए कहा था कि वोट की इज्जत आपकी बेटी की इज्जत से ज्यादा बड़ी होती है। अगर बेटी की इज्जत गई तो सिर्फ गांव और मोहल्ले की इज्जत जाएगी लेकिन अगर वोट एक बार बिक गया तो देश और सूबे की इज्जत चली जाएगी। इनके इस बयान के बावजूद भी हमारे देश की संसद ने इन्हें सर्वश्रेष्ठ सांसद का पुरुस्कार दिया यह हमारे लिए शायद जरुर शर्म का विषय है।

.....सितम्बर 2017 में ठाणे की एक अदालत ने कहा था कि छम्मक-छल्लो शब्द का इस्तेमाल करना' एक महिला का अपमान करने' के बराबर है। भारतीय समाज में इस शब्द का अर्थ इसके इस्तेमाल से समझा जाता है। आमतौर पर इसका इस्तेमाल किसी महिला का अपमान करने के लिए किया जाता है और इसे भारतीय दंड संहिता की धारा 509 के तहत अपराध किया है। किन्तु ऐसे अपराध चुनाव आयोग और संविधान की नजर में देश के नेताओं पर लागू क्यों नहीं होते?.....

वैसे देखा जाएँ चुनावी रैलियों में अकसर राजनीतिक बयानबाजी में महिलाओं को निशाना बनाया जाता रहा है। लेकिन अन्य कई मौको और मुद्दों पर भी कई राजनेता अपनी मानसिकता का दिखावा करने से बाज नहीं आते साल 2012 में दिल्ली में निर्भया गैंगरेप के बाद जब छात्राओं ने बड़ी संख्या में विरोध प्रदर्शन किया था तब कांग्रेस सांसद अभिजीत मुखर्जी ने हाथ में मोमबत्ती जला कर सड़कों पर आने वाली ये सजी संवरी महिलाएं पहले डिस्कोथेक में गई और फिर इस गैंगरेप के खिलाफ विरोध दिखाने इंडिया गेट पर पहुंची। ऐसा ही एक बयान कांग्रेस के वरिष्ठ नेता दिग्विजय सिंह ने अपनी पार्टी की महिला नेता मीनाक्षी नटराजन के बारे में कहा था कि मीनाक्षी जी का काम देख कर मैं यह कह सकता हूँ कि वह 100 टका टंच माल है।

कुछ समय पहले समाजवादी पार्टी के नेता मुलायम सिंह यादव ने बलात्कार जैसे घिनोने कृत्य पर कहा था कि लडकें है और लड़कों से गलती हो जाती हैं। साल 2012 में गुजरात चुनावों के नतीजों पर चल रही एक टीवी बहस के दौरान कॉंग्रेस सांसद संजय निरुपम ने स्मृति ईरानी को कहा था, कल तक आप पैसे के लिए ठुमके लगा रही थीं और आज आप राजनीति सिखा रही हैं।

कहा जाता है ऐसे बयानों के बावजूद अकसर ये राजनेता हल्की फुल्की फटकार के बाद बच निकलते हैं। यानि नेता किसी भी पार्टी या दल से जुड़ें हों। महिलाओं के बारे में आपत्तिजनक बयान देना सामान्य बात हो गयी है। जबकि सितम्बर 2017 में ठाणे की एक अदालत ने कहा था कि छम्मक-छल्लो शब्द का इस्तेमाल करना' एक महिला का अपमान करने' के बराबर है। भारतीय समाज में इस शब्द का अर्थ इसके इस्तेमाल से समझा जाता है। आमतौर पर इसका इस्तेमाल किसी महिला का अपमान करने के लिए किया जाता है और इसे भारतीय दंड संहिता की धारा 509 के तहत अपराध किया है। किन्तु ऐसे अपराध चुनाव आयोग और संविधान की नजर में देश के नेताओं पर लागू क्यों नहीं होते? ऐसे में मेरा तमाम राजनैतिक दलों से अनुरोध है महिला आरक्षण की बात बाद में कर लेना पहले महिलाओं को सम्मान देना सीख लें।- ***राजीव चौधरी***

देश और समाज विभाजन के षड़यन्त्र का पर्दाफास

आओ! जानें मनुस्मृति का सच

स्वाध्याय के लिए प्रक्षेप रहित संस्करण

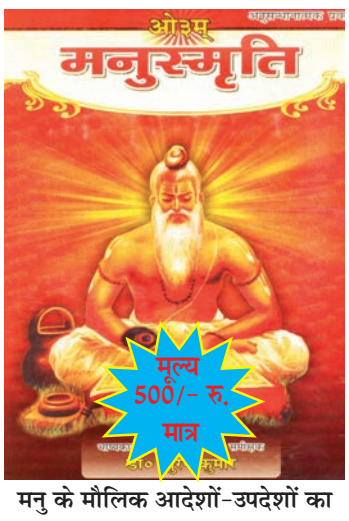

मनु के मौलिक आदेशों-उपदेशों का प्रसंगबद्ध वर्णन होने से स्वाध्यायशील महानुभावों के लिए परम उपयोगी।

मूल्य : ~~600/-~~ 500/-

प्राप्त करने हेतु सम्पर्क करें

वैदिक प्रकाशन, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-1, मो. 9540040339

भारत के सांस्कृतिक सन्तुलन की रक्षा - हम सब का दायित्व

इन पांच पुस्तकों को अवश्य पढ़ें

प्राप्ति स्थान : दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली - 110001, मो. 9540040339

प्रथम पृष्ठ का शेष

145वां आर्यसमाज स्थापना दिवस हर्षोल्लास .....

श्रीमती उषा जी एवं सुभाष ढीगड़ा जी, आर्य समाज सूरजमल विहार, श्री सुरेंद्र रैली जी, उपप्रधान, आर्य केंद्रीय सभा, श्री विक्रम नरुला जी, श्री अजय सहगल जी, श्रीमती उषा किरण जी, स्वामी धर्मेश्वरानंद जी, श्री सतीश चड्डा जी महामंत्री आर्य केंद्रीय सभा आदि महानुभावों की उपस्थिति में आर्यसमाज मॉडल टाऊन के विद्यार्थियों ने नववर्ष स्वागत गीत के द्वारा सभी आर्यजनों का अभिनंदन किया। आर्य केंद्रीय सभा के प्रधान एवं एम.डी. एच. के चेयरमैन पद्मभूषण महाशय धर्मपाल जी के साथ श्री धर्मपाल आर्य प्रधान दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, श्री सुरेंद्र रैली जी उपप्रधान आर्य केंद्रीय सभा, श्री विक्रम नरुला जी, स्वामी धर्मेश्वरानंद जी, श्री सतीश चड्डा जी, श्री कीर्ति शर्मा जी, श्री राजीव विज जी आदि ने द्वीप प्रज्जवलन किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता महाशय धर्मपाल जी ने की।

इसके उपरांत स्वामी धर्मेश्वरानंद जी ने आर्यसमाज के गौरवशाली इतिहास और वैदिक संस्कृति का उदाहरण देते हुए महर्षि दयानंद सरस्वती के उपकारों तथा उपदेशों पर चलने की प्रेरणा दी। उन्होंने पंडित लेखराम, महात्मा हंसराज, स्वामी श्रद्धानंद आदि महापुरुषों को स्मरण करते हुए नववर्ष की सबको शुभकामनाएं प्रदान की तथा ईश्वर, वेद आर्यसमाज और ऋषि दयानंद के प्रति समर्पित होने का संदेश

जारी पृष्ठ 8 पर

प्रथम पृष्ठ का शेष

ऋषि जन्मभूमि को और भव्य बनाने में देंगे .....

साथ लिये चित्र को अपनी समितियों में डाल लेना चाह रहे हो और यही हाल हवाई जहाज के अन्दर था। ऐसी परिस्थिति में हमारे लिये इस जनसमूह में महाशय जी को सम्भाल कर निकालना कठिन होता गया।

राजकोट हवाई अड्डे पर पहुंचते ही महाशय जी की ख्याति का मंजर सामने आया। अपार जनसमूह राजकोट हवाई अड्डे पर ढोल-नगाड़े, ओ३म् ध्वज लिये पहले से ही उपस्थित थे। हवाई जहाज के उतरते ही, उत्साह में, नगाड़ो की आवाज, गगन को छू लेने की एवं जो बोले सो अभय के नारो से वातावरण गूँज उठा। समाचार पत्रों के फोटोग्राफर, टी.वी. माध्यम से प्रवक्ता/रिपोर्टर चित्र लेने के लिए एकत्रित होते गये। देखते ही देखते पूरा हवाई अड्डा जय घोष से गूंज उठा। आर्य समाज के अतिरिक्त उनके गुजरात स्थित व्यपारी/डिस्ट्रीब्यूटर/स्टोकिस्ट उपस्थित थे। इस यात्रा का वृतांत के लिए एक विशाल प्रेस वार्ता का आयोजन इसी होटल में किया और रात्रि विशेष भोज का भी आयोजन था। रात्रि यहीं विश्राम किया।

प्रात: टंकारा यज्ञ पर उपस्थित होने के लिए आप राजकोट से प्रात: 10 बजे चले और 11 बजे टंकारा पहुँचे। आपके स्वागत हेतु टंकारा ट्रस्ट की ओर से टंकारा के विभिन्न मार्गो को विशेष रूप से सुसज्जित किया गया था। मुख्य परिसर तक मार्ग के दोनों ओर टंकारा गुरुकुल के ब्रह्मचारी एवम् स्थानी निवासीय ओ३म् ध्वज लिये खड़े थे। नगाड़ो की धुनो में महाशय जी का स्वागत किया गया। ऋषि जन्मभूमि पर पधारते ही ऋषि जन्मभूमि को नमन किया। उस समय महाशय जी के मुख मण्डल का नजारा देखने वाला था। खुशी और उत्साह से आपके मुख पर सूर्य की सुनहरी किरणों ने जो लालिमा बिखेरी वह देखने लायक थी।

यज्ञशाला में विशेष तिलक आदि से सुवर्ण कर आप मुख्य यज्ञवेदी पर उपस्थित हुए। इस अवसर पर आपके साथ दिल्ली से गए आपके निर्देशक क्रय श्री प्रेम अरोड़ा जी एवम् सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि के प्रधान श्री सुरेशचन्द्र आर्य जी एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्री विनय आर्य जी भी यज्ञवेदी पर उपस्थित थे।

प्रात:कालीन यज्ञ के उपरान्त पुष्प मालाओं एवं विशेष शालों को उढ़ा कर आर्य समाज टंकारा, आर्य प्रतिनिधि सभा गुजरात, एम.डी. स्मारक ट्रस्ट टंकारा, उपस्थित प्रतिनिधि सभा, टंकारा चैम्बर ऑफ कॉमर्स, टंकारा व्यापार संघ, आर्य समाज भुज, आर्य वीर दल, टंकारा एवं गांधीधाम से पधारे वाचोनिधि द्वारा पुष्प वर्षा कर आपकी आयु की प्रार्थना करते हुए आशीर्वाद दिया। इस अवसर पर ऋषिजन्मभूमि ट्रस्ट के ट्रस्टी श्री अरविन्द भट्ट जी, श्री हंसमुख परमार, श्री अजय सहगल जी, विशेष रूप से उपस्थित थे। टंकारा यज्ञवेदी पर प्रथम बार यज्ञ करने के पश्चात अपने पुत्र एवं पुत्रवधू की ओर से 2 लाख दान की घोषणा की।

इसके उपरांत महात्मा सत्यानन्द मुंजाल गुरुकुल भवन एवं बृजमोहन मुंजाल योग साधना भवन का अवलोकन कर वहीं यज्ञवेदी पर बैठ कर जन्मभूमि के कार्यो एवं गुरुकुल से सम्बन्धित जानकारी ली। कुछ समय बाद आप ऋषि दयानन्द के जन्मकक्ष को देखने गए। वहां उनके जीवन पर आधारित चित्रावली का अवलोकन भी किया। वहां रखी आगुन्तक पुस्तिका में पृष्ठ 20 पर पूरे एक पेज पर अपना सन्देश बिना ऐनक के लिखा। जिसे शीघ्र ही प्रकाशित किया जायेगा। वहां उपस्थित ट्रस्टियों से कहा कि आपने ऋषि जन्म स्थान को बहुत सुन्दर ढंग से रखा हुआ है परन्तु इसकी भव्यता इससे भी अधिक होनी चाहिए, मैं इससे सन्तुष्ट नहीं हूं। आप ने इसे और भव्यता से करने का प्रयास करने में सहायता का आश्वासन दिया। ब्रह्मचारियों के साथ भोजन कर राजकोट से दिल्ली के लिए प्रस्थान किया।

The Great Reformer of Indian Society Maharishi Dayanand Saraswati

In the 19th century, when the whole of India accepted the British rule as its fate and Instead of thinking to break the chains of their slavery, Indians accepted them as an ornament. The slavery in Political and mental had been embedded in the minds of people so deeply that talk of freedom also seemed to be like a dream. The country and society had been polluted by the evil practices of Sati, caste system, child marriage, vailing practice, idol worship, untouchability, and polytheism, etc., due to such odds, religion was becoming narrow. Christianity and Islam were at their peak.

Although the Mughal rule from India had ended at the political level it was still dominated at the social level. Urdu and the Arabic language were prevalent and people were becoming ignorant towards Vedic Hindu religion. People were left with no interest in their own culture. The Britishers on the country, hypocrisy on the religion were dominating and the entire society was imprisoned in the disguise of an anomaly.

At the same time, a child was born at the place known as-Tankara in Gujarat in February 1824, named as Mulshankar. Later he was known as Maharishi Dayanand Saraswati to the whole world. He taught this society to live, the society that was surrendering to the challenges and was accepting religious and political slavery.

The unequal treatment and discrimination on the basis of caste, the creed was the reason for the slavery of hundreds of years. People were nowhere looking forward to giving it up. At that time, the merciful Dev Dayanand Ji Maharaj explained to the masses that the feeling of untouchability or behavior is a crime which is contrary to the principles of Vedas. Whilst hurting many evils and superstitions based on religion and caste, Swamiji defied the practices of hypocrites, guardians of discrepancies. He told them that who behaves like Brahmin with his work and behavior is the best, not the one on the basis of any caste by birth.

The challenge of Swami Ji has raised the consciousness of society. Swamiji shook up the throne of Britishers by talking about political reforms with religious reforms. When the British Empress was giving Indians the sobbing of slavery by saying that we would take care of Indians as our children, then Swamiji had said that the king should be born from the soil of our country, whose roots are in the soil of our country, which should not be imported from abroad and whose faith is in Indian religion culture, civilizations, and traditions.

Later these words of Swamiji acted to shook the foundation of the English empire. Swami Dayanand Saraswati Ji always fought for truth, kept doing Satyagraha. He never adopted the right and the undesirable means for their purpose. Swamiji did not leave a single point or side untouched for the reforming, uplifting and organizing the society of India.

At this time, the Renaissance occurred in the country. The youth who were fighting for hundreds of years were questioned for how long they will fight for others! Either for this king or for that king, either for his caste or to protect the oars?

Wake up! For the sake of the unity of the nation, principles of religion, and for the creation of a nation- He encouraged the building of modern India. The English government was badly shaken by the ideologies of Swami Dayanand Saraswati. To get rid of Swamiji, various conspiracies were started to begin. For which the support of hypocrites cannot be denied who were looting this country in the name of religion.

This pioneer of Hindu religious reforms- Dayanand Saraswati, established Arya Samaj in Mumbai in April 1875. To spread the Vedas, he visited the whole country and explained to the Pandits and scholars about the importance of the Vedas.

Swami Ji initiated the purification movement-'Shudhi' by encouraging people to become Hindus who had been converted to Islam against their wishes. The establishment of Vedic colleges was restarted. Hindu society got a new consciousness and started getting rid of many ill virtues.

Swami Ji showed the path of monotheism. They opposed racism and child marriage and also encouraged women's education and widow remarriage. He said that any non-Hindus can be taken in Hindu religion, due to which the conversion of Hindus was stopped at that time. He wrote-'Satyarth Prakash', a book to show the right path to this society. He devoted his youth, his entire life for serving this country and society.

Could the sacrifices of Swamiji be forgotten? No! He whole heartedly worked for the people through his teachings, articles, writeups and presenting his respected, ideal and noble character in front of them. His efforts for society had indeed made the work of future political leaders easy and simple. Undoubtedly, Swami Dayanand Saraswati Ji is the real creator of Indian society and nation.

आर्य सन्देश के वार्षिक सदस्यों की सेवा में

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के मुखपत्र **साप्ताहिक "आर्यसन्देश"** के समस्त वार्षिक सदस्यों से निवेदन है कि अपना वार्षिक शुल्क यथाशीघ्र सभा कार्यालय को भेज दें जिससे उन्हें नियमित रूप से आर्यसन्देश भेजा जाता रहे। जिन सदस्यों के शुल्क तीन वर्षों से अधिक बकाया हों उनसे निवेदन है कि वे अपना आजीवन (10 वर्षीय) शुल्क भेजें। कृपया इस कार्य को यथाशीघ्र प्राथमिकता से करें। सभी सदस्यों को पत्र द्वारा सूचना भी भेजी जा रही है।

वार्षिक शुल्क 250/- रुपये तथा **आजीवन शुल्क** (मात्र दस वर्षों हेतु) **1000/- रुपये** है। पत्र व्यवहार के लिए कृपया अपना नाम, सदस्य संख्या, पिनकोड तथा मो. नं. अवश्य लिखें।

- सम्पादक

सुख समृद्धि हेतु यज्ञ कराएं

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की योजना 'घर-घर-यज्ञ, हर-घर-यज्ञ' राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली में उत्साह पूर्वक नित्य निरंतर प्रगति की ओर है। वैदिक वाङ्मय में यज्ञ की विशेष महत्ता का वर्णन मिलता है। यज्ञ के द्वारा संसार के सभी ऐश्वर्य मानव को प्राप्त होते हैं। यजुर्वेद में कहा गया है कि 'अयं यज्ञो भुवनस्य नाभि:' अर्थात् यह यज्ञ संसार का केन्द्र बिन्दु है, अर्थात् विश्व का आधार है। शतपथ ब्राह्मण में कथन है कि 'स्वर्ग कामो यजेत्' अर्थात् हे मनुष्य यदि तू संसार के सुख प्राप्त करना चाहता है तो यज्ञ कर। आप भी अपने घर-परिवार में यज्ञ कराने के लिए सम्पर्क करें। यदि परमात्मा की व्यवस्थानुसार आपका परिजन/परिचित मृत्यु को प्राप्त होता है, उसके अन्तिम संस्कार की व्यवस्था हेतु भी आप सम्पर्क कर सकते हैं।

- सत्यप्रकाश आर्य 9650183335

संघ लोक सेवा आयोग (UPSC) द्वारा आयोजित सिविल सर्विसेज IAS परीक्षा - 2019 एवं 2020

भाग लेने के इच्छुक विद्यार्थी ध्यान दें

आर्यसमाज के शिक्षण संस्थानों/गुरुकुलों/सेवाकेन्द्रों/बालवाड़ियों, डी.ए.वी. संस्थानों/ विद्यालयों से शिक्षा प्राप्त ऐसे प्रतिभावान छात्र/छात्राएं जो वर्ष 2019 में आयोजित होने वाली सिविल सर्विसिज एग्जामिनेशन में भाग लेना चाहते हैं, अर्थिक एवं मूलभूत आवश्यकताओं के अभाव के कारणों से परीक्षा तैयारियां नहीं कर पा रहे हैं उन सबके लिए आर्यसमाज की ओर से स्वर्णिम अवसर।

महाशय धर्मपाल आर्य प्रतिभा विकास संस्थान की ओर से राष्ट्रवादी विचारधारा वाले, आर्य शिक्षण संस्थानों में शिक्षा प्राप्त सुयोग्य पात्रों को आर्थिक सहयोग एवं परीक्षा तैयारियों के लिए प्रशिक्षण की सुविधा प्रदान करने की घोषणा की जाती है। योजना का लाभ प्राप्त करने के इच्छुक महानुभावों को एक लिखित/मौखिक एवं बौद्धिक परीक्षा पास करनी होगी। सफल परीक्षार्थियों में से प्रथम 40 अभ्यर्थियों को दिल्ली में आमन्त्रित करके, भोजन, आवास एवं तत्सम्बन्धी समस्त सुविधाएं निशुल्क प्रदान की जाएंगी तथा प्रशिक्षण की तैयारियां कराई जाएंगी। इस योजना का लाभ उठाने के इच्छुक विद्यार्थी/परीक्षार्थी अपने शैक्षिक प्रमाण पत्रों, वित्तीय स्थिति के विवरण तथा आवश्यक कागजातों की प्रति के साथ अपना आवेदन पत्र संस्थान की ईमेल आई.डी. dss.pratibha@gmail.com पर ईमेल करें। अधिक जानकारी के लिए मो. 9540002856 पर सम्पर्क करें। परीक्षा की तिथि शीघ्र ही घोषित की जाएगी। - *व्यवस्थापक*

प्रेरक प्रसंग

और गाड़ी उलट गई

अभी कल की बात है आर्यसमाज के उत्सवों व नगर-कीर्तनों में हमें खड़तालें बजाते हुए, मस्ती से गानेवाले एक संन्यासी को सुनने का सौभाग्य प्राप्त होता था। वे संन्यासी थे ऋषि भक्त स्वामी बेधड़क जी। वे हरियाणा के एक छोटे-से ग्राम में एक दलित परिवार में जन्मे थे। आर्यसमाजी क्या बने, एक अग्रिम पुरुष बन गये। देश-धर्म के लिए कोई दस बार जेल गये।

वे हमें बताया करते थे कि प्रथम विश्वयुद्ध के पश्चात् वे प्रथम बार गाँधी जी की पुकार पर जेल गये। अबोहर से कोई आठ मील की दूरी पर दोतारांवाली ग्राम में उन्होंने गिरफ्तारी दी। तब आपने अपना नाम विरजानन्द रखा हुआ था। इस क्षेत्र में यह प्रथम राजनैतिक गिरफ्तारी थी। पुलिस ऐसा दुर्व्यवहार करती थी कि स्वामीजी को रस्सों से बाँधकर पुलिस ने अपनी गाड़ी के पीछे कसकर बाँध लिया। कुछ दूर ही गये थे कि गाड़ी उलट गई। मुसलमान थानेदार लालू को बहुत चोटें आई। ईश्वर का विधि-विधान देखें कि हमारे स्वामीजी को एक भी चोट न आई। थानेदार ने कर-जोड़ क्षमा माँगी कि "बाबाजी! आपकी बद्दुआ से मुझे चोटें आई हैं।" स्वामी बेधड़कजी ने कहा, "मैंने तो तेरे दुर्व्यवहार के कारण तेरा बुरा नहीं माँगा। मैं तो इन यातनाओं को देशहित में हँस-हँसकर सहन कर रहा हूँ।" आइए! इन आर्यवीरों का स्मरण कर देश में हिंसकों व क्रूर लोगों से लोहा लें।

- प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु

साभार :

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी **: पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्ति हेतु आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।**

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं गुरुकुल पौंधा के संयुक्त के तत्त्वावधान में

नि:शुल्क योग साधना एवं सत्यार्थ प्रकाश स्वाध्याय शिविर

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं गुरुकुल पौंधा, देहरादून के संयुक्त तत्त्वावधान में दिनांक 27 मई से 2 जून 2019 तक गुरुकुल पौंधा में योग साधना एवं स्वाध्याय शिविर का आयोजन किया जा रहा है। इस स्वाध्याय के विषय पंचमहायज्ञ आदि होंगें। अपनी पुस्तक साथ लेकर जाएं अन्यथा वहां से खरीदनी पड़ेगी। शिविर पूर्णत: नि:शुल्क है। केवल आने-जाने का मार्ग व्यय खर्च होगा। दिल्ली से पौंधा बस द्वारा आना-जाना लगभग 800 रुपये है। लोकल ट्रेन से जाने वाले शिविरार्थी अपना रिजर्वेशन स्वयं करवा लें तथा सूचना दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा में अवश्य दे देवें। शिविर में रहने व भोजन की व्यवस्था गुरुकुल की ओर से नि:शुल्क होगी। दिल्ली से रविवार दिनांक 26 मई 2019 को रात्रि में रवाना होंगे व रविवार 2 जून 2019 को पौंधा से वापसी होगी। शिविर में जाने के लिए सम्पर्क करें-

श्री सुखवीर सिंह आर्य, शिविर संयोजक,
मो. 09350502175, 07289850272

सार्वदेशिक आर्यवीरांगना दल के तत्वावधान में

राष्ट्रीय व्यक्तित्व विकास एवं आरत्मरक्षण शिविर

31 मई से 9 जून,19 : महर्षि दयानन्द निर्वाण स्थली, अजमेर (राजस्थान)

शिविरार्थी की आयु कम से कम 14 वर्ष हो। ⋆शिविरार्थी को शिविर स्थल पर 30 मई दोपहर 1 बजे तक अवश्य पहुंचना होगा। ⋆ सभी शिविरार्थी अपना नामांकन 31 मई दोपहर 1 बजे तक अवश्य करा लें। शिविर में शक्षिका, सह शिक्षिका, नायिका की भी इस बार अलग कक्षाएं लगाई जाएंगी। परीक्षा में उत्तीर्ण आर्य वीरांगनाओं को प्रमाण पत्र दिए जाएंगे।- ***साध्वी डॉ. उत्तमायति, प्रधान संचालिका, 9672286863***

आर्य वीरांगना दल दिल्ली प्रदेश के तत्वावधान में

विशाल चरित्र निर्माण एवं आत्मरक्षा प्रशिक्षण शिविर

दिनांक : 19 मई से 26 मई 2019, आर्य कन्या गुरुकुल, नरेला, दिल्ली

शिविरार्थी की आयु 11 वर्ष से अधिक हो। ⋆ शिविरार्थी को शिविर स्थल पर 19 मई को प्रात: 11 बजे तक अवश्य पहुंचना होगा। शिविर शुल्क 400/- रुपये है। अधिक जानकारी हेतु सम्पर्क करें- **श्रीमती शारदा आर्या, संचालिका, 9971447372**

अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ के तत्त्वावधान में

38वां वैचारिक क्रान्ति शिविर: 16 से 26 मई, 2019

आर्यजन अभी से तिथियां नोट कर लेवें और अधिकाधिक संख्या में पहुंचकर देश के विभिन्न आदिवासी क्षेत्रों से पधारे कार्यकर्ताओं का उत्साहवर्धन करें। जानकारी के लिए सम्पर्क करें - ***जोगेन्द्र खट्टर, महामन्त्री (9810040982)***

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार
(नैक द्वारा 'A' ग्रेड प्राप्त यू.सी.जी. एक्ट 1956 के सेक्सन -3 के अन्तर्गत समविश्वविद्यालय)

प्रवेश सूचना-I (2019-20)

निम्न पाठ्यक्रमों में प्रवेश हेतु आवेदन पत्र आमंत्रित किये जाते हैं:-

एम.एस-सी. • भौतिकी • गणित • रसायन विज्ञान
• माइक्रोबायोलॉजी • पर्यावरण विज्ञान • पर्यावरण टैक्नोलॉजी
एम.सी.ए. बी.फार्म. बी.फार्म. द्वितीय वर्ष (लेटरल इन्ट्री)
एम.पी.एड. बी.पी.एड.

उपरोक्त पाठ्यक्रमों में प्रवेश काउंसलिंग के माध्यम से **प्रवेश परीक्षा** की मेरिट के आधार पर दिये जायेंगे।
आवेदन पत्र व विवरण पत्रिका शुल्क **रु0 1000/-** नकद अथवा डिमाण्ड ड्राफ्ट के द्वारा जमा कर **कुलसचिव** कार्यालय से प्राप्त किये जा सकते हैं। ऑनलाइन/वेबसाइट से डाउनलोड किये गये आवेदन पत्र भी निर्धारित शुल्क के साथ स्वीकार्य होंगे।
प्रवेश प्रक्रिया एवं अन्य विस्तृत जानकारियाँ **विवरण पत्रिका/ विश्वविद्यालय वेबसाइट** पर उपलब्ध हैं।
आवेदन पत्र जमा करने की अंतिम तिथि: 15.05.2019
www.gkv.ac.in कुलसचिव
follow us on: @gkvsocial @gkvharidwar #gkv_hdr

सार्वदेशिक आर्यवीर दल का राष्ट्रीय प्रशिक्षण शिविर

दिनांक : 2 जून से 16 जून 2019

स्थान : गुरुकुल शिविालिक अलियासपुर अम्बाला (हरियाणा)

सार्वदेशिक आर्य वीर दल के अध्यक्ष डॉ. स्वामी देवव्रत सरस्वती जी की अध्यक्षता में शाखानायक, उप व्यायाम शिक्षक, व्यायाम शिक्षक श्रेणी का शारीरिक एवं बौद्धिक प्रशिक्षण हेतु राष्ट्रीय प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया जा रहा है। **प्रवेश शुल्क : शाखानायक : 500/-रुपये, उप व्यायाम शिक्षक एवं व्यायाम शिक्षक के लिए 600/- रुपये है** (पाठ्य पुस्तकें शिविर की ओर से दी जायेंगी।) विस्तृत जानकारी के लिए संयोजक श्री रविन्द्र सिंह 9991700034 से सम्पर्क करें।

- सत्यवीर आर्य, प्रधान संचालक, 9414789461

आर्यसमाज पंखा रोड, जनकपुरी के वार्षिकोत्सव का समापन समारोह

आर्यसमाज पंखा रोड, सी ब्लाक जनकपुरी, नई दिल्ली का वार्षिकोत्सव समारोह का समापन 28 अप्रैल को प्रात: 7:30 से 1 बजे तक आयोजित किया जा रहा है। इस अवसर पर डॉ. धर्मेन्द्र शास्त्री जी के प्रवचन तथा श्री सहदेव बेधड़क जी के भजन होंगे। मुख्य अतिथि श्री प्रवेश साहिब सिंह वर्मा होंगे तथा अध्यक्षता स्वामी प्रणवानद जी सरस्वती होंगें।

- रमेशचन्द्र आर्य, मन्त्री

प्रवेश सूचना

आर्य कन्या गुरुकुल भुसावर, जिला- भरतपुर (राजस्थान) महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय (आर्ष पाठ विधि) तथा राजस्थान मा. शिक्षाबोर्ड से मान्यता प्राप्त है, में कक्षा 5 से कक्षा 8 तक प्रवेश प्रारम्भ हैं। गुरुकुल में संगीत, वाद्ययन्त्रों का प्रशिक्षण, कम्प्यूटर, सिलाई प्रशिक्षण भी दिया जाता है। इस वर्ष केवल 20 छात्राओं को ही प्रवेश दिया जाएगा। निर्धन एवं अनाथ बालिकाओं के लिए छात्रवृत्ति की व्यवस्था है। अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें

- प्रियंका आर्या,
मो.9694892735, 8441087408

डीएवी कोटा में बांधे परिण्डे

डीएवी एवं आर्य समाज कोटा ने विद्यालय परिसर में छात्र-छात्राओं ने पक्षियों के लिए मिट्टी के परिण्डे बांधे।

इस अवसर पर वाईस चैयरमेन श्री एम.एल. पटौदी ने कहा कि ईश्वर के बनाये इन मूक पक्षियों के लिए गर्मी में परिण्डे बांधकर इनमें नियमित पानी भरना मानवीय सत्कर्म है। आर्य समाज कोटा के पूर्व जिला प्रधान अर्जुनदेव चूडढा ने छात्र-छात्राओं को अपने घरों की छतो, बालकनियों में भी परिण्डे रखकर पानी भरने के लिए प्रेरित किया।

- अर्जुनदेव चड्ढा, पूर्व प्रधान आर्य समाज कोटा जिला सभा

आर्य वधु चाहिए

दिल्ली के प्रतिष्ठित आर्य परिवार के लड़के जन्म 13 जुलाई 1989, शिक्षा बी.एड., कद 5'8'', रंग गोरा, इकहरा बदन, वजन 68 किलो, गोत्र धूतकश्यप, दक्षिण दिल्ली में अपना घर, वेतन 3 से 4 लाख वार्षिक, के लिए आर्य परिवार की कन्या चाहिए जिसका परिवार व स्वयं वैदिक सिद्धान्तों को मानने वाली और संध्या-हवन स्वतंत्र रूप से करना जानती हो, दिल्ली एन.सी.आर. निवासी को वरीयता। ***सम्पर्कसूत्र- 9540040324***

शोक समाचार

श्री बृजभूषण तालय का निधन

आर्यसमाज बी.एन. पूर्वी शालीमार बाग के वरिष्ठ अधिकारी एवं बृज कम्पनी के संस्थापक श्री बृजभूषण तायल जी का दिनाक 21 अप्रैल, 2019 को लगभग 86 वर्ष की आयु में निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति के साथ निगम बोध घाट पर किया गया। उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा 27 अप्रैल, 2019 को 3 से 4 बजे आर्यसमाज बी.एन. पूर्वी शालीमार बाग में सम्पन्न हुई, जिसमें सभा अधिकारियों के साथ-साथ निकटवर्ती अनेक आर्यसमाजों के सदस्यों एवं अधिकारियों ने पहुंचकर अपने श्रद्धासुमन अर्पित किए।

श्री सोहन लाल मुखी जी को पौत्री शोक

आर्यसमाज प्रशान्त विहार, दिल्ली के पूर्व मन्त्री श्री सोहनलाल मुखी जी की सुपौत्री कु. श्रेया जी का 16 अप्रैल, 2019 को अल्पायु में निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति के साथ 17 अप्रैल को पंजाबी बाग शमशान घाट पर किया गया। उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा 19 अप्रैल को अग्रवाल धर्मशाला प्रशान्त विहार में सम्पन्न हुई, जिसमें सभा महामन्त्री श्री विनय आर्य जी, आचार्य अखिलेश्वर जी, आर्य तपस्वी श्री सुखदेव, आचार्य शिवनारायण शास्त्री जी सहित निकटवर्ती अनेक आर्यसमाजों के अधिकारियों एवं सदस्यों ने पहुंचकर अपने श्रद्धासुमन अर्पित किए।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्माओं को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दु:ख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। -सम्पादक

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2018-19-2020
नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 25-26 अप्रैल, 2019
पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2018-19-2020
आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 24 अप्रैल, 2019

पृष्ठ 5 का शेष

दिया। इस क्रम में डॉ. महेश विद्यालंकार ने आर्य समाज का चिंतन राष्ट्र और विश्व का कल्याण करने वाला बताया और कहा कि वेद की ज्ञानधारा ही विश्व शांति की राह है। संसार की सर्वोच्च विचारधारा आर्य समाज है। ऋषि दयानंद के सपनों को साकार करने के लिए सभी संकल्प लें। श्री राजीव विज जी ने आर्य समाज के प्रति अपना प्रेम प्रदर्शित करते हुए अपने पूज्य पिता जी को स्मरण किया और उनकी प्रेरणा का वर्णन करते हुए आर्य समाज मॉडल बस्ती के सेवाकार्यों को आगे बढ़ाने की बात कही और साथ में यह भी कहा कि मैं आर्य समाज के सेवा कार्यों में समर्पित भाव से बढ़ चढ़कर हिस्सा लूंगा।

नव सवंत्सर के अवसर पर आर्य गुरुकुल दयानंद विहार के विद्यार्थियों ने एक प्रेरक कार्यक्रम, **(यह न कहो कि क्या नहीं कर सकता अकेला)** प्रस्तुत कर आर्यों में आशा और उत्साह का संचार किया, दयानंद पब्लिक स्कूल शादी खामपुर के विद्यार्थियों ने आर्यसमाज की विश्व को देन (नमस्ते) का मंचन कर सबको नवजागृति प्रदान की। इस क्रम में दयानंद पब्लिक स्कूल न्यू मोती नगर के विद्यार्थियों ने आई फौज दयानंद वाली गीत के साथ सबको भावविभोर कर दिया। पुष्पावती दयानंद आदर्श विद्यालय मॉडल बस्ती के विद्यार्थियों ने कशमीर न छोड़ेंगे की प्रस्तुति के साथ आर्यजगत का संकल्प प्रस्तुत किया। एस. एम. आर्य पब्लिक स्कूल पंजाबी बाग के विद्यार्थियों ने सच्ची घटना पर आधारित आर्यसमाज की प्राचीन उपलब्धियों को उजागर करते हुए आर्यसमाज के सेवा भाव को बहुत ही सुंदर तरीके से प्रस्तुत किया। इन विभिन्न प्रस्तुतियों को देखकर वहां उपस्थित आर्यजनों ने महसूस किया कि आर्यसमाज का भविष्य उज्जवल है।

आर्य परिवार होली मंगल मिलन कार्यक्रम में लक्की ड्रा द्वारा निकाले गए पारितोषिक नामों में श्री विरेश आर्य जी के सुपुत्र एवं श्री नवीन जी प्रमुख थे, दोनों को महाशय जी द्वारा सम्मान प्रदान किया गया। इस क्रम में श्री अनुभव आर्य जी को प्रयागराज में कुंभ के अवसर पर समर्पित सेवाभाव से आर्यसमाज के प्रचार-प्रसार में अग्रणी भूमिका निभाने हेतु महाशय धर्मपाल जी एवं श्री धर्मपाल आर्य जी द्वारा विशेष रूप से सम्मानित किया गया। इस अवसर पर महाशय धर्मपाल जी ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में भावपूर्ण अमृतवचन प्रस्तुत करते हुए कहा- आर्यसमाज से मुझे बहुत प्यार मिला है, विनय आर्य एक आदर्श सेवाभावी, समर्पित युवा है। मैं भगवान से यही प्रार्थना करता हूं कि आर्य समाज आगे बढ़े, आगे बढ़े, आगे बढ़े, आगे बढ़े, ऊंचा उठे, खूब तरक्की करे, मेरी आप सबको बहुत-बहुत शुभकामनाएं। मंच संचालन आर्य केन्द्रीय सभा के महामन्त्री श्री सतीश चड्डा ने किया। इस तरह प्रेम सौहार्द के वातावरण में आर्य समाज का 145 वां स्थापना दिवस एवं नव वर्ष समारोह का अविस्मरणीय आयोजन सुखद सफलता के साथ संपन्न हुआ। *-महामन्त्री*

प्रतिष्ठा में,

आर्य प्रतिनिधि सभा अमेरिका के अन्तर्गत 29वां आर्य महासम्मेलन : जुलाई 25-28, 2019

आर्य प्रतिनिधि सभा अमेरिका और आर्य समाज शिकागोलैंड की ओर से 29 वें आर्य महासम्मेलन जुलाई 25-28, 2019 को, शिकागो, अमेरिका में आयोजित किया जा रहा है। सम्मेलन का विषय है - वेद की ज्योति द्वारा अपने जीवन का प्रदीपन है। इसके अन्तर्गत वैदिक परिप्रेक्ष्य में विश्व शांति, निरंतर समरसता, नारी सशक्तीकरण के विषय सम्मिलित होंगे।

इस अवसर पर योग एवं ध्यान सत्र, रोचक युवा सत्र, सांस्कृतिक कार्यक्रम, आर्य समाज से संबंधित सम-सामयिक विषयों पर चर्चा, सामाजिक कल्याण सम्बंधित चर्चाओं, और वयस्कों तथा युवाओं के लिए गतिविधियों को शामिल किया जाएगा, जिससे कि हम सभी अपने भौतिक, नैतिक-आध्यात्मिक और सामाजिक उत्थान के लक्ष्यों की ओर बढ़ते हुए संसार का भी उपकार करते चलें। सम्मेलन में भाग लेने वालों के लिए ऑनलाइन पंजीकरण अनिवार्य है।

भारत से पहुंचने वाले आर्यजनों के लिए विशेष यात्रा का का प्रयास किया जाएगा। जो महनुभाव महासम्मेलन में भाग लेने के इच्छुक हों वे कृपया अपना विवरण aryasabha@yahoo.com पर भेजें। सम्मेलन के बारे में अधिक जानकारी के लिए www.aryasamaj.com/ams पर लॉगइन करें।

सुरेशचन्द्र आर्य प्रधान
प्रकाश आर्य मन्त्री
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

डॉ. सुखदेव सोनी **भुवनेश खोसला**
सम्मेलन संयोजक
Email : mahasammelan@gmail.com

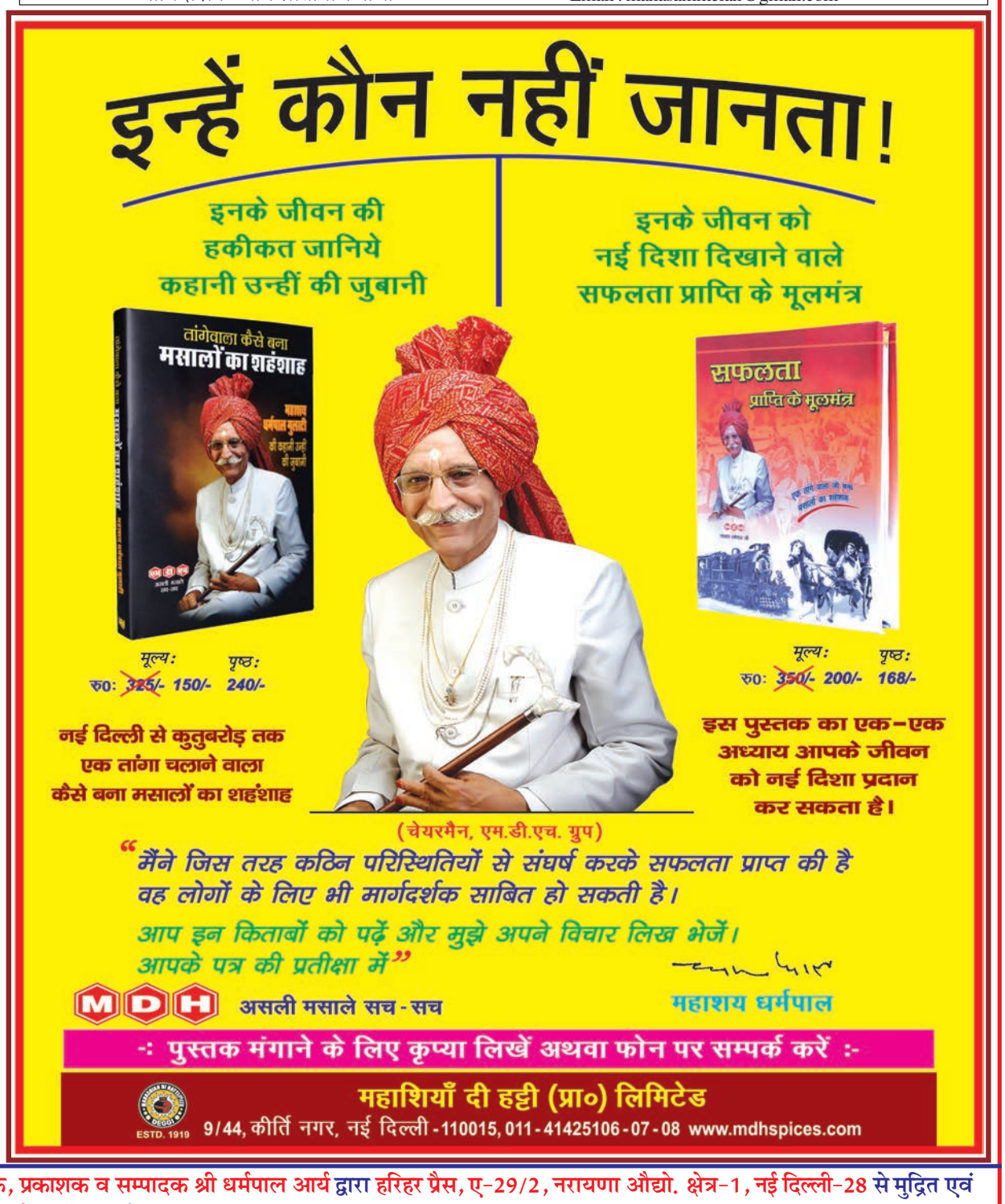

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए-29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित
सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह